# गंगा बेसिन सबसे ज्यादा नाजुक स्थिति में

दबंग रिपोर्टर ■ इंदौर

देश के लगभग हर क्षेत्र के ग्रीन कवर का बड़ा हिस्सा पर्यावरण परिवर्तन के कारण जोखिमभरी स्थिति तक पहुंच चुका है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि फसलीय क्षेत्रों का दो तिहाई हिस्सा भी इस स्थिति का सामना कर रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार हर तरह के जंगल के 50 फीसदी हिस्से पर्यावरण परिवर्तन के कारण खतरे में हैं। देश की खाद्यान्न सुरक्षा के लिहाज से यह सबसे बड़ा चिंता का विषय है। इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) इंदौर ने देश के वानस्पतिक क्षेत्रों पर पर्यावरण परिवर्तन के चलते हुए प्रभावों पर एक अध्ययन किया, जिसमें देश के 24 बड़े रिवर बेसिन सहित 10 बड़े वानस्पतिक क्षेत्रों में किए गए अध्ययन का मकसद वनस्पति और पर्यावरण की एक दूसरे पर निर्भरता की मुख्य बातों को सामने लाना था ताकि देश के वानस्पतिक क्षेत्रों और बदलते पर्यावरण पर मंडराते खतरे पर नीति निर्धारण किया जा सके। वहीं बताया गया कि 24 में से 16 रिवर बेसिन के आधे जंगल और फसल वाले क्षेत्र मिट्टी की नमी में कमी के कारण सूखने की कगार पर हैं। उत्तर पश्चिम क्षेत्र के माही, लूनी और साबरमती रिवर बेसिन का 80 फीसदी हिस्सा अत्यधिक सूखाग्रस्त होने की संभावना है।

**बिगड़ सकती है मिट्टी की नमी की स्थिति**

इसमें बताया गया कि क्षेत्र के अनुसार गंगा बेसिन सबसे ज्यादा नाजुक स्थिति में है, क्योंकि इसका 25 फीसदी हिस्सा सूखने की आशंका है। दक्षिण भारत में पेन्नार रिवर बेसिन का पूरा क्षेत्र वानस्पतिक रूप से सूख सकता है, क्योंकि यहां मिट्टी की नमी की स्थिति बिगड़ सकती है। आने वाले समय में कावेरी, तापी और कृष्णा रिवर बेसिन पर भी सूखे का खतरा है। इन सभी का आधे से ज्यादा हिस्सा बदलते पर्यावरण के कारण गंभीर रूप से खतरनाक हो सकता है।

**Dabang Dunia (Indore), 24th March 2019, Dabang Dunia 2, Page-3**